गिजूभाई का शिक्षा में ंयोगदान

शोध निर्देशिका **शोधार्थी**

डॉ वन्दना जैन
महात्मा ज्योतिराव फुले वि. वि.,जयपुर

रघुनन्दनशर्मा
महात्मा ज्योतिराव फुले वि.वि,जयपुर

गिजूभाई बधेका का जन्म चित्तल सौराष्ट (गुजरात) में 15 नवत्बर 1885 में हुआ था। उनका पूरा नाम गिरिजाशंकर भगवान जी बधेका था। इस पूरे नाम की अपेक्षा लोग उन्हें गिजूभाई कहकर पुकारते थे। 1915 में वे श्री दक्षिणामूर्ति विद्यार्थी भवन के कानूनी सलाहकार बन गये। तथा 1918 में दक्षिणामूर्ति विद्यालय भवन के आजीवन सदस्य बनें। इस संस्था के द्वारा एक बाल भवन चलाया जाता था जिसका नाम ''विनय भवन'' था। इस विनय भवन के आचार्य के रूप में गिजू भाई ने 4 वर्ष तक कार्य किया। 1920 में उन्होंने बाल मन्दिर की स्थापना की तथा वकालात छोड़कर पूरी तरह बाल शिक्षा के लिए समर्पित हो गए तथा इस क्षेत्र में उन्होंने नये–नये प्रयोग कियें।

इनका दक्षिणामूर्ति बाल मन्दिर बच्चों के सम्यक् इन्द्रिय विकास, शांति की क्रीड़ा, शैक्षिक भ्रमण, शारीरिक कार्य, कथा कहानी श्रवण जैसी प्रवृतियों का केन्द्र था। जिसमें बच्चे हँसते–हँसते मनवांछित गतिविधियों में भाग लेते हुए शिक्षा प्राप्त करते थे। गिजू भाई द्वारा भावनगर में तख्तेश्वर मन्दिर के पास टेकसी पर स्थापति बालमन्दिर का उदघाटन 1922 में कस्तूरबा गाँधी के कर कमलों से हुआ था। उन्होंने 1925 में भावनगर में प्रथम मॉण्टेसरी सम्मेलन आयोजित किया जिसके साथ उन्होंने पहला अध्यापन मन्दिर स्थापित किया। 1938 में उन्होंने राजकोट में अध्यापन मन्दिर स्थापित किया जो शिक्षा के क्षेत्र में उनका अन्तिम अवदान था। इनका समस्त जीवन बाल शिक्षा के क्षेत्र में नये–नये–प्रयोग करते हुए व्यतीत हुआ। वे बच्चो के साथ सदैव ताजा महसूस करते थे। शिक्षा के क्षैत्र में अनवरत् व्यस्तता इनकी चरम उपलब्धि थी। वे विविध विषयों के शिक्षण के साथ बच्चों में सत्य, अहिंसा , करूणा, सहयोग, सहकार जैसे मानवीय गुणों के विकास पर अधिक बल देते हुए तथा शिक्षा के क्षेत्र में उन गतिविधियों को अपरिहार्य मानते थें जिनसे इन गुणों का विकास हों।

गिजूभाई से 16 वर्ष पूर्व गुजरात में गाँधाी जी ने जन्म लिया था। गाँधी जी यदि राष्ट्रपिता थे तो ''बालको के गाँधी '' गिजूभाई बालकों के लिए '' मूंछों वाली माँ थें।'' प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में जिन शिक्षाविद्ों ने मौलिक कार्य किया उनमें गिजू भाई बधेका का नाम अग्रणी है। जिनके बारे में स्वयं गाँधी जी ने लिखा था–'' गिजू भाई के बारे में कुछ लिखने वाला मैं कौन हूँ? उनके कार्यों ने तो मुझे सदैव मुग्ध किया है। मुझे दृढ़ विश्वास हैं कि उनका कार्य आगे बड़ चलेगा।

साहित्यिक कृतियाँः–

गिजूभाई का साहित्य पूरे भारत की अमुल्य धरोहर हैं क्योंकि कि उनकी कृतियाँ शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत कर्मियों का ही नही अपितु माता–पिता का भी पथ आलौकित कर सकती है। इनकी सर्वाधिक चर्चित पुस्तक 'दिवास्वप्न'' हैं यह प्राथमिक शिक्षा पर केन्द्रित हैं जिसमें इनके भाषा , इतिहास, भूगोल , गणित, व्याकरण आदि के मनोरंजन प्रयोग है। मॉण्टेसरी पद्धति पर इनकी दो पुस्तके बाल मन्दिर या पूर्व प्राथमिक शिक्षण के लिए सर्वाधिक उपयोगी हैं जिसमें मॉण्टेसरी के दर्शन ओर प्रयोगों का अत्यन्त रोचक वर्णन है। बाल शिक्षण ''जैसा मैं समझा पाया'' यह पुस्तक पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक दोनों ही स्तर के लिए उपयोगी हैं क्योंकि इसमें इन्होंनें बच्चों के सीखने के मनोविज्ञान पर आधारित उनेक तत्वों का वर्णन किया है। ''माता पिता से'' ''माँ बाप बनना कठिन है।'' ''माता पिता के प्रश्न'' और ''माँ बच्चों की माथापच्ची'' उनके ये पुस्तके उन अभिभावको माता पिताओं के लिए है, जो बच्चों को शिक्षा के प्रति अधिक संवेदनशील हैं। ''कथा कहानी–शास्त्र'' कहानी पद्धति का विस्तृत वर्णन है। इस प्रकार इनकी पुस्तके बाल दर्शन की

श्रेष्ठ कृतियाँ हैं जिनके आधार पर हम प्रचलित शिक्षा में नवाचार और प्रयोग करके शिक्षा को बच्चो की रूचि और आनन्द के अनुरूप बना सकते हैं।

बाल मन्दिर और गिजूभाई द्वारा अपनाइ गई पद्धतियाँ–

गिजूभाई ने कुल मिलाकर 22 पद्धतियों का प्राथमिक शिक्षा के स्तर के लिए प्रयोग किया था मगर बालमन्दिर के लिए उन्होंने कोइ एक निश्चित पद्धति तय नही ंकी थी। उनका आधार मॉण्टेसरी था। और प्रयोग भी उसी पर केन्द्रीत थे। इन्होंने जिन पद्धतियों का प्रयोग किया उनमें से कुछ बाल मन्दिर या पूर्व प्राथमिक स्तर के लिए भी उपयोग हैः जैसे–

1.प्रश्नोत्तर पद्धतिः–

यह पद्धति अपनाने से बच्चे प्रारम्भ से ही हीनता की भावना से मुक्त होकर साहसी बनते हैं। अपनी जिज्ञासा या उत्सुकता को शांत कर सकते हैं और साथियों और शिक्षक के साथ मित्रता स्थापित कर सकते है। गिजू भाई बच्चों को आपस में समूह में बैठाकर अपने आप प्रश्न करने, उत्तर देने या खोजने और स्वयं भी प्रश्न खेल में शामिल होने आदि प्रयोग करते थे। इससे बच्चे एक विशेष प्रकार की स्वतंत्रता और दृढ़ता का अनुभव करते है।

2.जोड़ीदार पद्धतिः–

मॉण्टेसर इस पद्धति का खूब प्रयोग करती थी। इसमें कक्षागत शिक्षा के बजाय व्यक्तिगत शिक्षा पर जोर रहता है। इसमें बच्चे स्वयं अपनी शिक्षा करते हैं और शिक्षक का सहारा लेना कम करते जाते है। विद्यार्थी स्वयं अपना व साथियों के बीच गुट बना लेते है। इसमें समूह शिक्षा में लगने वाले समय से कम समय लगता है। और बच्चे स्वयं अपनी पसन्द की जोडी बनाकर सीखते है। खेलते है। और तरह–तरह की गतिविधियाँ करते है। इससे सीखने की गति तेज होती है।

3.नाट्य प्रयोग पद्धतिः–

बच्चे अनुकरण में मजा लेते है। तरह–तरह के अभिनय या नकल करना उन्हें पसन्द होता है। अपने सामने घटी घटनाओं को वे बडे. मनोरंजन ढ़ंग से बताते है। इससे उनकी सृजन एवं कल्पनाशक्ति का विकास होता है। और अनेक बाल कथाओं कहानी घटनाओं के आधार पर नाटक करके बच्चे जल्दी सीखने लगते है।

4.त्रिपद प्रणालीः–

यह प्रणाली बाल मन्दिरों में अधिक प्रचलित है। इसमें प्रथम चरण में बच्चों को वस्तु और संज्ञा के साथ जोडा जाता है। संज्ञा का नाम लेकर वस्तु का परिचय दूसरे चरण में कराया जाता है। और तीसरे चरण में यह पुष्टि की जाती है। कि वस्तु से संज्ञा का वस्तु से ज्ञान हुआ था नहीं।

5.किण्डरगार्टन पद्धतिः–

इस पद्धति को पेस्तॉलाजी के शिष्य फ्रोबेल ने बालवाडी के माध्यम से अपनाया! इसके अन्तर्गत बच्चो में : 1ः एकता 2ः आंतरिक विकास और 3ः पारस्परिक सम्बन्ध का प्रयोग इस प्रकार होता है। कि बच्चो की साहित्य समझ बढ़ती है। सामूहिक शिक्षा इस प्रणाली का गुण हें बालक की शारीरिक व मानसिक विकास के लिए उनकी रूचियों का महत्व इस पद्धति में सर्वाधिक हें वाटिका, प्रहलाद, कहानी कथन, प्रकृति व प्राणियों से प्रेम, अवलोकन एकाग्रता आदि इस पद्धति के विशेष तत्व है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 .बधेका गिजुभाई : बाल शिक्षण। प्रकाशक मॉण्टेसरी बाल–शिक्षण समिति राजलदेसर (चुरू) 331802

2 बधेका गिजुभाईः गिजुभाई का शिक्षा में योगदान, सुरजीतप्रकाशन, दाऊजी का मंदिर के पास , बीकानेर पाठक, भरतलाल

3 बाल शिक्षण जैसा मैंने समझा, गिजुभाई अंकित पब्लिकेशनन मानसरोवर, जयपुर

4 बधेका गिजुभाईः मॉन्टेसरी पद्धति प्रथम भाग। प्रकाशक मॉण्टेसरी बाल–शिक्षा समिति ,राजलदेसर (चुरू)

5 बधेका गिजूभाईः प्राथमिक शाला में कला कारीगरी की शिक्षा (प्रथम भाग) प्रकाशक मॉण्टेसरी बाल शिक्षक समिति राजभडेसर (चूरू) 331802